Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 4 | APRIL 2023

कृषि एवं औधोगिक विकास का एक सकारात्मक अवलोकन:- बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में।

मेजर (डॉ.) शम्भु नाथ सिंह [1] | ओम प्रकाश सिंह [2]

[1] विभागाध्यक्ष, भूगोल, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, मोहनिया, कैमूर.

[2] शोधार्थी, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार).

ABSTRACT:

बिहार भारत के सबसे तेजी से विकास कर रहे राज्यों में से एक है। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। यह राज्य भारत वर्ष में सब्जियों का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है और भारत में फल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, विनिर्माण आदि राज्य में तेजी से बढ़ते उद्योगों में से कुछ है। आर्थिक, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के कारण औधोगिक वातावरण में बड़े पैमाने पर परिवर्तन हुआ है। वर्तमान औद्योगिक नीति के माध्यम से राज्य में उद्योगों के लिए अनुकूल माहौल बनाने एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र में अधिकतम निवेश करने के लिए लागू किया जा रहा है। बिहार में मक्का का उत्पादकता देश के सभी राज्यों से अधिक है। राज्य अपने लीची पैदावार हेतु भारत तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में विख्यात है। मखाना राज्य का एक विशेष उपज है।

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्मारकों को देखते हुए बिहार में पर्यटन क्षेत्र में प्रचूर संभावनायें है। पर्यटन के दृष्टिकोण से बिहार की बड़ी प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति इसके प्राचीन और वर्तमान जीवित सभ्यता जो कि दो महान धर्मों बौद्ध धर्म और जैन धर्म को जन्म दिया। बिहार हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख एवं इस्लाम की धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। यह नालन्दा और विक्रमशीला, प्राचीन विश्वविद्यालयों की भूमि है। जहाँ से संसार के विभिन्न देशों से विद्यार्थीयो के माध्यम से सुदूर और विस्तृत क्षेत्र में ज्ञान का प्रसार हुआ है। संभावना योग्य पर्यटन स्थल प्रस्तावित करने हेतु वन्यजीव अभ्यारण्य को एकीकृत कर परिस्थितिकी पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा सकता है। बिहार के पास अद्वितीय मेला और महोत्सव है जैसे- सोनपुर मेला, छठ पर्व, सौराठ सभा, राजगीर महोत्सव और बौद्ध महोत्सव समुचित सुविधा के विकास के उपरान्त घरेलू के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखता है।

KEYWORDS:

आर्थिक, खनिज, उपस्कर, विनिर्माण, निवेश, औद्योगिक, पर्यटन, संसाधन, उदारीकरण, प्रसंस्करण, अर्थव्यवस्था, सास्कृतिक, विरासत, अभ्यारण्य, महोत्सव, अर्द्धकुशल, परंपरागत।

बिहार भारत के सबसे तेजी से विकास कर रहे राज्यो में से एक है । वर्ष 2005-06 से 2014-15 तक की अवधि में बिहार के जी0एस0डी0पी0 में वार्षिक 10.5 प्रतिशत की दर से निरंतर वृद्धि हुई है, जो कि महत्वपूर्ण भारतीय राज्यों में सर्वाधिक है। बिहार में पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक परिर्वतन की गति एवं पैमाने में वृद्धि देखी गयी है जो सरकार द्वारा शुरू की गई व्यापक घरेलु सुधार कार्यक्रम का परिणाम रहा है। इसमें सार्वजनिक वित्त के प्रबंधन, बुनियादी ढांचे के निमार्ण और सबसे महत्वपूर्ण बात कानून एवं व्यवस्था की मशीनरी में सुधार एवं सरकारी व्यय के साथ सार्वजनिक निवेश के सुधार में परिवर्तन रहा है। इन सभी परिवर्तनों ने राज्य में निजी निवेश एवं अधिक से अधिक उद्योग प्रतिबद्धता के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान की है।

बिहार के पूर्वी और उत्तर भारत में, कोलकत्ता और हल्दिया के बंदरगाह के रूप में, कच्चे माल के श्रोतों और पड़ोसी राज्यो से खनिज भंडार के बंदरगाहो के उपयोग एवं विशाल बाजार की उपलब्धता की वजह से एक अनूठा स्थान है एवं इससे राज्य को विशेष लाभ प्राप्त है। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है एवं यह सब्जियों का सबसे बड़ा उत्पादक है और भारत में फल का दूसरा सबेस बड़ा उत्पादक है। बिहार बड़े पैमाने पर जल संसाधन में संपन्न है। जमीनी और सतह के पानी दोनो के रूप में राज्य में प्रत्येक वर्ष 1009 उण्उ औसत वर्षा होती है। राज्य की प्रमुख नदियों में गंगा मुख्य नदी है, जो हिमालय में अपने स्त्रोतों के साथ सहायक नदियो से जुडी हुई है। कुछ अन्य प्रमुख नदियो में सरयू, गंडक, बुढीगण्डक, बागमती, कमला और महानन्दा है। राज्य में प्रभावित औद्योगिक श्रम का एक बडा आधार है, जो राज्य के औद्योगिक विकास एवं उद्योगो की विस्तृत श्रृंखला के रूप में राज्य को एक आदर्श स्थल बना रही है। खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, विनिर्माण, स्वास्थ्य आदि राज्य में तेजी से बढते उद्योगो में से कुछ है। राज्य में कृषि उपस्कर एवं छोटे मशीन विनिर्माण, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी और अक्षय उर्जा आदि क्षेत्रो के विकास के लिए पहल कर योजना भी बनाई गई है।

बिहार पूरे जोश के साथ प्रदेश में बुनियादी ढांचे के विकास पर काम कर रहा है। पर्याप्त सड़को के अभाव में कोई राज्य अपने आर्थिक विकास में वृद्धि के बारे में कैसे सोच सकते है। इस पृष्ठभूमि में राज्य सरकार द्वारा दूर-दराज के क्षेत्रो को पटना राजधानी से जोड़ने के क्रम में यह संकल्प लिया है कि लोग एक स्थान से राज्य के किसी भी जगह अधिकतम समय छह घंटे मे दूरी तय कर वे राजधानी तक पहुँच सकते है। हाल के वर्षों में राज्य सरकार ने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास भी किये है एवं परिणाम के रूप में सड़को और पुलो का नेटवर्क तेजी से बढ़ा है। राज्य सरकार ने बिहार सड़क संसाधन सुरक्षा नीति, 2013" को अपनाया है ताकि बढ़ती सड़क नेटवर्क के बेहतर रख रखाव को सुनिश्चित किया जा सकें। बिहार राज्य में राज्य राजमार्ग (स्टेट हाईवे) की कुल लंबाई 4253 किमी है (2015 तक)। इसमें से लगभग 65 प्रतिशत हिस्सा डबल लेन सड़कों का है दूसरे तरफ राष्ट्रीय राज्यमार्ग का राज्य के आर्थिक विकास में सामरिक महत्व है। क्योंकि यह राज्य को पड़ोसी राज्यों से जोड़ता है। राज्य में राष्ट्रीय राज्यमार्ग की कुल लंबाई 4595 किमी है (2015तक) । इसके नेटवर्क को और बढ़ाने के लिए तीव्र गति से प्रयास भी किए जा रहे है।

स्वर्णिम चतुर्भुज हाईवे जो कि बिहार के कुछ जिलों यथा-कैमूर, सासाराम, औरंगाबाद, गया एवं पटना से होकर गुजरती है। जिले शाखा सड़कों के माध्यम से इस हाईवे से अच्छी तरह से जुडे हुए हैं। जिससे राज्य के अंदर एवं दूसरे राज्यों यथा उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उडीसा और झारखंड के बाजार एवं मांग के आधार पर उत्पादों को भेजना सुलभ हो पाता है। यह भारत के प्रमुख औद्योगिक, कृषि और सांस्कृतिक केन्द्रो के लिए कनेक्टिविटी भी प्रदान करता है। कई राज्यों से होकर गुजरने वाली स्वर्णिम चतुर्भुज हाईवे, जिसकी लंबाई 204 कि0मी0 है, और चैड़ा किया जा रहा है।

पूर्वी डेडीकेटेड फ्रट कोरिडोर भी बिहार राज्य से होकर गुजरती है एवं बिहार को पश्चिम बंगाल, झारखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा एवं पंजाब के साथ जोडती है, जो राज्य में उद्योगों के निवेश के लिए बेहतर है। इससे काफी कम परिवहन लागत के साथ कम समय में तैयार उत्पादों को बंगाल की खाड़ी में अवस्थित बंदरगाहों तक परिवहन की सुविधा प्राप्त होती है।

राज्य सरकार ने उर्जा क्षेत्र में उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना पर काम शुरू किया है, जिसके तहत् वर्ष 2016/17 तक 1330 मेगावाट, वर्ष 2017-18 तक 3310 मेगावाट तथा 2021-22 तक 7270 मेगावाट बिजली की कुल उत्पादन क्षमता हासिल करने का लक्ष्य है, जो राज्य के लिए पर्याप्त होगी। इस क्रम में उर्जा विभाग द्वारा अपनी परिकल्पना को हकीकत में बदलने के लिए बिहार राज्य उर्जा उत्पादन निगम

लि0,(BSPGCL) द्वारा संयुक्त उपक्रम के तहत् देश के प्रतिष्ठित कंपनियों यथा-नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन(NTPC) एवं नेशनल हैड्रो पावर कारपोरेशन(NHPC) के साथ इकरारनामा किया गया है । इसके तहत् राज्य मे अवस्थित बिजली क्षेत्र की प्रमुख परियोजनाओं यथा नवीनगर स्टेज-1, बक्सर, भागलपुर एवं लखीसराय तथा बांका के विभिन्न चरणों को प्रारंभ किया जाना है। इन परियोजनाओं के पूर्ण होने के उपरांत राज्य की जरूरतो के मुमाबित सेंट्रल सेक्टर से उर्जा की आवश्यकता कम होगी एवं राज्य उर्जा की आवश्यकताओं में पूर्ण करने में आत्मनिर्भर होगा। राज्य के औद्योगिकरण के लिए भूमि की उपलब्धता सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। नतीजतन भूमि अधिग्रहण का महत्व काफी बढ़ जाता है। उद्योगों तथा अन्य संबद्ध क्षेत्रों में भूमि की बढ़ती मांग को पूरा किये जाने के क्रम में 1500 करोड रूपये के निधिकोष के माध्यम से लैंड बैंक की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया था। जिसे बढ़ाकर 2500 करोड़ रूपये किया गया। पिछले कुछ वर्षों में राज्य सरकार द्वारा भूमि विकास बैंक एवं औद्योगिक क्षेत्रों का तेजी से निर्माण सुनिश्चित करने के लिए इस मद में बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार को 1650 करोड रूपये उपलब्ध कराया गया है ।

आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के कारण औद्योगिक वातावरण में बडे पैमाने पर परिवर्तन हुआ है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा कलस्टर आधारित दृष्टिकोण के तहत् चमडा, छोटी मशीनरी, प्लास्टिक कपडे, जूट एवं वस्त्र और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में विनिर्माण को बढावा दिये जाने एवं विशेष कलस्टर एंव MSME उद्यम को स्थापित करने की प्रक्रिया की जा रही है ।

बिहार राज्य में निवेश की सुविधा के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए कार्यप्रणाली को अपनाया जा रहा है जिससे राज्य तेजी से प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कुछ मुलभुत सुधार के उपाय किए गये है. यथा शिकायत निवारण के लिए उद्योग संवाद पोर्टल, एकल खिडकी प्रणाली का प्रभावी का प्रभावी कार्यान्वयन विभिन्न श्रम कानुनों के तहत एकल एकीकृत प्रणाली, उद्योगो के जोखिम के आधार पर निरीक्षण अनुपालन प्रणाली, विभिन्न श्रम कानुनों श्रम कानुनो का प्रावधान ।

वर्तमान औद्योगिक के माध्यम से राज्य में उद्योगो के लिए अनुकूल माहौल बनाने एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र में अधिकतम निवेश करने के लिए लागू किया जा रहा है जिसमें विशेष रूप से निम्न क्षेत्रों में यानि प्रसंस्करण, पर्यटन, छोटी मशीनरी उत्पादन, आईटी, आईटीईएस और इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रा ॅनिक हाईवेयर विनिर्माण, वस्त्र, प्लास्टिक एवं रबर, अक्षय उर्जा, चमड़ा एवं तकनीकी शिक्षा प्रक्षेत्र। इसका मुख्य उद्देश्य राज्य भर में उद्योगो की स्थापना के साथ राज्य के प्राकृतिक संसाधनो के महत्तम मूल्य संबर्धन एवं राजस्व पैदा करने तथा रोजगार सृजन करना है। इस नीति का मसौदा विभिन्न उद्योग संघो उद्योगो के प्रतिनिधियों, निवेशक, विषय विशेषज्ञो के साथ गहन बातचीत एवं उनके विचार को समायोजित करने के उपरांत तैयार किया गया है। यह उम्मीद है कि इस नीति के कार्यान्वयन से राज्य का औद्योगीकरण के साथ रोजगार सृजन और समग्र विकास होगा ।

बिहार में कुछ प्रक्षेत्रों यथा खाद्य प्रसंस्करण, चमड़ा, पर्यटन, आदि में प्राकृतिक फायदे हैं और राज्य सरकार, अधिकतम रोजगार सृतन सुनिश्चित करने यथा लोगो के जीवन स्तर में सुधार करने हेतु इन फायदो पर ध्यान केन्द्रित करना चाहेंगी। प्राथमिक प्रक्षेत्रों का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण इस प्रकार है ।

खाद्य प्रसंस्करण प्रक्षेत्र:

बुनियादी तौर पर एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होने के कारणवश बिहार में मानव उपयोग हेतु प्रसंस्कृत किये जाने वाले कच्चे सामग्रियों की पर्याप्त आपूर्ति प्रदान करने वाला बृहत कृषि एवं पशु उत्पादन आधार है । इन प्राकृतिक फायदों के बावजूद, खाद्य प्रसंस्करण का स्तर काफी निम्न है और एक टिकाउ उपभोगता बाजार प्रदान करते हुए राज्य की बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु खाद्य प्रसंस्करण स्तर को विकसित करने की भरपूर संभावना है। आगे, नगरों और ग्रामीण बिहार में बढ़ती हुई आय तथा परिवर्तित हो रहे जीवन-यापन व्यवस्था उपभोगता मांग को प्रसंस्कृत खाद्य की ओर खींच रहा है । अतएव राज्य खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए एक टिकाउ अवसर प्रदान करता है और इस राज्य के औद्योगिकीकरण अभियान में अग्रणी भूमिका अदा करने की संभावना प्रदान करता है । प्रदान की जानेवाली प्रमुख उत्पाद के इन प्रक्षेत्रों में हमारी कुछ रणनीतिक फायदे इस प्रकार है।

खाद्यान्न(अनाज एवं दाले) तथा तिलहन:

(क) विगत 5 वर्षों अर्थात 2010-11 से 2014 के दौरान राज्य में अनाजों का उत्पादन स्तर वार्षिक तौर पर 5.65 प्रतिशत बढ़ा है। वर्ष 2014-15 में राज्य का अनाज उत्पादन 143.21 लाख टन था जो देश में सबसे अधिक है ।

(ख) हमारे कुछ महत्वपूर्ण उत्पाद है चावल 82.41 लाख टन, गेहूँ: 3570 लाख टन, मक्का 24.78 लाख टन, दाल4.28 लाख टन तथा तेलहनः1.27 लाख टन ।

(ग) बिहार में मक्का की उत्पादकता देश कि सभी राज्यों से अधिक है । फल (आम, अमरूद, लीची तथा केला) और सब्जी आलू बंदगोभी फूलगोभी, ओकरा):

(क) सब्जियों के उत्पादन में देश में बिहार का स्थान पहला है ।

(ख) राज्य में उत्पादित कुछ महत्वपूर्ण सब्जियों है-आलू: 63.46 लाख टन, प्याज: 12.47 लाख टन, फूलगोभी 10.03 लाख टन, टमाटरः 10.46 लाख टन। अन्य सब्जियां जैसे बंदगोभी, भिंडी, गाजर और मटर का भी उत्पादन होता है जो वाणिज्यिक प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त हो सकते है ।

(ग) राज्य में उत्पादित कुछ महत्वपूर्ण फल हैः- केला-15.27 लाख टन, आम-12.72 लाख टन, अमरूद- 3.7 लाख टन, लिची-1.98 लाख टन ।

(घ) राज्य अपने लीची पैदावार हेतु भारत तथा अंतर्राष्टीय बाजारों में विख्यात है और यहाँ पल्प, जूस, पल्प स्लैब, नेक्टार, जैम, जेली इत्यादि हेतु इकाई स्थापित करने की वृहद संभावना है ।

मखानाः-

(क) मखाना राज्य का एक विशेष उपज है जिसका उपयोग उच्च श्रेणी के खाद्य-पदार्थों में किया जा सकात है तथा इसका समुचित विपणन कर अच्छे दाम में बेचा जा सकता है ।

(ख) मखाना काफी पोषक एवं प्रोटीन से भरपुर खाद्य पदार्थ है। इसकी तुलना मछली-मीट में उपलब्ध प्रोटीन से की जा सकती है। चीन में कच्चे मखाना बीज पाउडर को बच्चों के भोजन का एक अनिवार्य अंग माना जाता है ।

पर्यटन प्रक्षेत्रः-

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक और ऐतिहासिक स्मारको को देखते हुए बिहार में पर्यटन क्षेत्र में प्रचुर संभावनाएँ है। पर्यटन के दृष्टिकोण से बिहार की बड़ी प्रतिस्पर्धात्मक शाक्ति इसके प्राचीन और वर्तमान जीवित सभ्यता, जो कि संसार के दो महान धर्मों बौद्ध धर्म और जैन धर्म को जन्म दिया है । बिहार हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख और इस्लाम की धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। बिहार में एक समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत के साथ सम्पन्न विशाल शक्तिशाली मगध साम्राज्य की शक्ति का एक आधार थी। यह नालन्दा और विक्रमशीला, प्राचीन विश्वविद्यालयों की भूमि है। जहाँ से संसार के विभिन्न देशों से विद्यार्थियों के माध्यम से सुदूर और विस्तृत क्षेत्र में ज्ञान का प्रसार हुआ है । इन दो प्राचीन विश्वविद्यालयों के अवशेष, प्राचीन वस्तुएँ और कलाकृतियां बडी संख्या में पर्यटकों करती है। राज्य भर में अलग-अलग परिदृश्य और संस्कृति विरासत, प्रकृति वन्य जीवन, कल्याण एवं अन्य अद्वितीय उत्पादों की अपनी ताकत भर में विभिन्न उत्पाद के पेशकश की धनी/ चित्रय वनिका है। यात्रियों को आकर्षित करने के लिए राज्य द्वारा की गई मुख्य उत्पादों की पेशकश निम्नवत है-

आध्यात्मिकताः-

बिहार में पर्यटन के लिए पारंपरिक रूप से अध्यात्मिक रूचि के स्थानों पर जाकर यात्रियों के घुमने के आसार है। इस पहलू पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कुछ चिन्हित पर्यटन सर्किट निम्न प्रकार है-

(a) बुद्ध सर्किटः- बोधगया (गया), राजगीर (नालन्दा), नालन्दा, वैशाली, लौरिया नंदनगढ़(पूर्वी चम्पारण) लौरिया अरेराज (पूर्वी चम्पारण), केशरिया (पूर्वी चम्पारण), विक्रमशीला(भागलपुर),जहानाबाद ।
(b) सूफी सर्किटः- गनेरशरीफ(पटना), खानकाह मुजीविया (पटना), मित्तन घाट(पटना), हाजीपूर करबला (वैशाली), हसनपुर (नालन्दा), बीबी कमाल साहिय (जहानाबाद), बडी दरगाह (नालन्दा), छोटी दरगाह (नालन्दा)।
(c) जैन सर्किटः- वैशाली, राजगीर (नालन्दा), पावापुरी (नालन्दा), नाथनगर(भागलपुर), मन्दार हिल (बाँका), चम्पानगर (भागलपुर), कुन्दलग्राम (नालन्दा), समोसारण (नालन्दा) एवं लछोर (जमुई)
(d) रामायण सर्किटः- वाल्मिकीनगर (50 चम्पारण), पेतशीला (गया), अहिल्या

स्थान (दरभंगा), सीतामढी काको (जहानाबाद), सीताकुण्ड(सीतामढी), सिंहेश्वर(सहरसा), रामशीला (गया), बक्सर, गिद्धेश्वर (जमुई)।

(e) शक्ति सर्किट मुण्डेश्वरी स्थान (कैमूर), चण्डी स्थान(मुगेर) उग्रतारा स्थान (महिषी सहरसा) आमि (सारण), थावे(गोपालगंज), ताराचण्डी स्थान(रोहतास), बखोरापुर(भोजपुर), श्यामाकली (दरभंगा) भगवती।

(f) सिख सर्किटः- पटना साहिब (पटना सिटी, पटना), बाललीला साहब(पटना), गुरू तेग बहादुर गुरूद्वारा (गायघाट, पटना), गुरूनानक कुण्ड(राजगीर, नालंदा), आरा, कटिहार, गया एवं सासाराम, भागलपुर, गुरू का बाग (पटना सिटी, पटना), गुरूद्वारा पक्की संगत (मुंगेर), गुरूद्वारा हंदी साहेब (दानापुर, पटना)।

(g) गाँधी सर्किटः- मोतिहारी (पूर्वी चम्पारण), बेतिया (पश्चिमी चम्पारण), भितिहरवा आश्रम (पश्चिमी चम्पारण), सदाकत आश्रम(पटना), गाँधी संग्रहालय (पटना)।

(h) शिव सर्किटः- गुप्ताधाम (कैमूर), बैजूधाम(गया), कोटेश्वर धाम (गया), सिंधेश्वर धाम(मधेपुरा), कुशेश्वर स्थान (दरभंगा), सिंहेश्वर स्थान(जहानाबाद), अजगैबीनाथ(सुल्तानगंज, भागलपुर), अशोक धाम(लखीसराय), आरण्य देवी(आरा), गरीबनाथ(मुजफ्फरपुर), महेन्द्रनाथ (सारण), ब्रम्हेश्वरनाथ (बक्सर)।

(i) मण्डार एवं अंग सर्किट मुंगेर, भागलपुर एवं बाँका।

(j) कांवरिया रूट सुल्तानगंज (भागलपुर) से बाँका।

संस्कृति और विरासतः-

बिहार विस्तृत संरक्षित स्मारकों की शरणी है। विश्व विरासत स्थल और अनेक अन्य स्थल जैसे नालन्दा के भग्नावशेष एवं विक्रमशीला (ससार के प्राचीनतम विश्वविद्यालय) जो विश्व विरासत स्थलों की क्षगता रखते हैं।

संरचनाओं की मौलिकता को बनाये रखते हुए ऐतिहासिक इमारतो को परिवर्तित इमारतो के साथ विशेष विरासत जोन के रूप में विकसित किया जा सकता है।

हमारी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आर्किलोजिकाल सर्वे ऑफ इण्डिया और दूसरे राज्य सरकारों के समन्वय से संग्रहालयों का उन्नयन और विकास, नव उद्घाटित बिहार संग्रहालय एक महात्वपूर्ण आकर्षण है।

बिहार के हस्तकरघा और हस्तशिल्प के विकास के उद्देश्य से शिल्पग्राम (क्राफ्ट भिलेज) और हस्तशिल्प बाजार पर्यटक स्थलों के नजदीक प्रोत्साहित किया जा रहा है।

ग्रामीण/गाँवः-

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के सामाजिक, आर्थिक लाभ को बढ़ावा देने के लिए बिहार के कला तथा शिल्प के चारो ओर ग्रामीण पर्यटन को विकसित करना एवं बढा़ना देना। उदाहरण स्वरूप टेहटा (जहानाबाद), नेपुरा(नालंदा), रंती एवं जितवरपुर (मधुबनी), पत्थरकट्टी(गया), नाथनगर(भागलपुर) इत्यादि कार्यरत गांव ग्रामीण पर्यटन के विकास के रूप में लक्षित किया जा सकता है।

कल्याणः-

योगा और राजगीर तथा मुंगेर के सल्फर जल गर्म के झरनों को एक्वाथेरापी आधारित कल्याण पर्यटन के रूप मे विकसित किया जा सकता है। यह बिहार का अधिकतम अनोखा पर्यटन संभावना हो सकता है। यह बिहार की सबसे अनोखी पर्यटन मानसिक एवं आध्यात्मिक शारीरिक हर आयाम से समग्र चिकित्सा और व्यक्ति के कायाकल्प की पेशकश उत्पाद हो सकती है।

पारिस्थितिकी और जीवन वन्यः-

संभावना योग्य पर्यटन स्थल प्रस्तावित करने हेतु वन्यजीव अभ्यारण्य को एकीकृत कर परिस्थितिकी पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा सकता है। चिन्हित पर्यटन स्थलों में से कुछ हैं- राजगीर (नालन्दा), भीमबांध अभ्यारण्य (मुंगेर), कैमूर अभ्यारण्य (कैमूर), गौतमबुद्ध अभ्यारण्य (गया), नकटीधाम (जमुई), गोगाविल अभ्यारण्य (भागलपुर), कांवर झील (बेगुसराय), घोडाकटोरा (नालन्दा), ककोलत झरना (नवादा), तेलहर झरना (रोहतास), गन्नेटिक डाल्फिन अभ्यारण्य (भागलपुर), एवं बाल्मिकी नेशनल पार्क (पश्चिमी चम्पारण)।

गंगा आधारितः-

पटना, भागलपुर ईत्यादि के किनारे ऐतिहासिक स्थलों को जल मार्ग के सहारे विकसित करने के लिए गंगा एक अद्वितीय पर्यटक उत्पाद हो सकता है।

साहसिकः-

डोल्फिन को देखना राज्य के लिए एक दूसरा अद्वितीय पर्यटक उत्पाद है जिसे सुदृढ़ किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के जलीय खेल जैसे रीवर राफ्टिंग, पारासेलिंग ईत्यादि को अधिक आर्थिक अवसर के रुप में विकसित किया जा सकता है।

मेला एवं महोत्सवः-

बिहार के पास अद्वितीय घटनाओं मेला और महोत्सव है जैसे- सोनपुर मेला, छठ पर्व, सौराठ सभा, राजगीर महोत्सव और बौद्ध महोत्सव समुचित सुविधा के विकास के उपरान्त घरेलू के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं।

सिनेमाः-

पर्यटन स्थलों पर फिल्म सूटिंग को सिंगल विन्डो क्लियरेन्स के माध्यम से आवश्यक प्रोत्साहन के साथ प्रासंगिक सरकारी अधिसूचना के तहत बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

राज्य के अमीर पाक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए बिहार के व्यंजन पाक को बढ़ावा दिया जा सकता है।

व्यंजन आधारितः-

फूड फेस्टिवल के आयोजन के माध्यम से राज्य की अद्वितीय व्यंजन जैसें- खाजा, लाई, बेलग्रामी, तिलकुट, लिट्टी-चोखा, सत्तु और मखाना के उत्पाद आर्थिक अवसर उत्पन्न करने की संभावना रखते हैं।

वर्तमान में ये चिन्हित उत्पाद एवं सर्किट विभिन्न प्रकार के आधारभूत संरचना एवं सेवा सम्बन्धित निवेश के लिए अछूते पड़े हैं। इन चिन्हित सर्किटों के अतिरिक्त राज्य में बहुत से भौगोलिक क्षेत्र जिन्हें पर्यटन के दृष्टिकोण से भविष्य में विकसित किया जा सकता है। पर्यटन उद्योग के विभिन्न प्रक्षेत्रों में वर्तमान एवं संभावित निवेश संभावना तथा भविष्य में अवसर एवं बहुत संख्या में रोजगार के अवसर को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा अपने निवेश प्रोत्साहन नीति में इस क्षेत्र के विकास एवं बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से उसे थ्रस्ट क्षेत्र के रुप में विचार किया गया है। इसलिए नीति में इस प्रक्षेत्र में निजी निवेश को बढ़ावा देने एवं प्रोत्साहित करने के लिए प्रबन्ध किये गये हैं।

पर्यटन क्षेत्र के निवेश प्रोत्साहन हेतु प्राथमिकता क्षेत्र निम्नवत है-

- पर्यटन स्थल पर टैक्सी परिचालन।
- कैब परिचालन/पर्यटन स्थल पर रेडियो टैक्सी परिवहन
- टूरिस्ट सर्किट पर लक्जरी कार एवं कोच बस का परिचालन
- टूरिस्ट सर्किट पर एयर टैक्सी एवं हेलिकाॅप्टर सेवा
- विशेष पर्यटन ट्रेन, नौका एवं स्टीमर इत्यादि।

लघु यंत्र विनिर्माण प्रक्षेत्रः-

बिहार की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। यद्यपि कृषि की उच्च लागत और फसलों की उत्पादकता यानि कृषि लागत एवं उत्पादन के बीच के सम्बन्ध देश के एवं अन्य राज्यों की तुलना में एक सतत समस्या रही है। सिंचाई सुविधायें उपलब्ध कराने, साथ-साथ उच्च उपज देने वाली बीज का उपयोग, कीटनाशकों का उपयोग, उर्वरक एवं खेती के बेहतर तकनीक का उपयोग, आधुनिक कृषि संयंत्र कृषि उत्पादन की उत्पादकता बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार सर्वोतम स्तर के यांत्रिकीकरण के लिए बिहार में कम लागत पर कृषि का माहौल बनाना अनिवार्य है।

हाल में बिहार के खेतों में आधुनिक कृषि औजार का उपयोग काफी बढ़ा है। बिहार के कृषि रोड मैप के तहत कृषि यांत्रिकीकरण एक अभिन्न हिस्सा है। राज्य सरकार पावर टीलर्स, ट्रैक्टर, स्पेयर्स, ओसावन मशीन, पावर वीडर, पावर थ्रेसर पर केन्द्र संपोषित योजनान्तर्गत प्रोत्साहन के अतिरिक्त प्रोत्साहन देती है। जीरो टीलेज यंत्रों जो छोटे और सीमान्त किसानों के भूमि जोत लिए अधिक उपयुक्त है, उसे ध्यान दिया जाना है। आसानी से प्रोत्साहन उपलब्ध होना, किसानों का विकासात्मक दृष्टिकोण, आधुनिक उपकरणों का उपयोग राज्य में सामान्य सा हो रहा है। विद्युतीकरण में हुई वृद्धि के फलस्वरुप विद्युत आधारित कृषि यंत्र, पम्प के उपयोग में वृद्धि हुई है। राज्य में कृषि यंत्र का बाजार उच्च विकास को दर्शाता है जिसमें

भविष्य में भी अधिक वृद्धि की संभावना है। सदा बढ़ते हुए घरेलू उपयोग बाजार और राज्य में इस क्षेत्र में अब तक नगण्य निवेश को ध्यान में रखते हुए औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन नीति में बिहार सरकार द्वारा कृषि में जुड़े लघु संयंत्र विनिर्माण को प्राथमिकता क्षेत्र में रखा गया है।

सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवायें तथा इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रोनिकी हार्डवेयर विनिर्माण प्रक्षेत्र ग्लोबली सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवा उद्योग हार्डवेयर क्षेत्र सहित संसार में सबसे बड़ी और सबसे तेजी से बढ़ने वाली उद्योग है। इसे वर्ष 2020 तक लगभग 2.4 ट्रिलियन यू0एस0डी0 तक पहुँचने की उम्मीद है। केवल भारतीय बाजारों में वर्ष 2020 तक इसकी माँग 400 विलियन यू0एस0डी0 से अधिक पहुँचने की संभावना है। सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं का महत्व केवल अपने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी उद्योगों का अभिन्न अंग हो गया है। यह रोजमर्रा के जीवन में सभी क्षेत्रों में सार्थक पैठ रखता है। अतः यह स्थापित हो गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं के क्षेत्र में कृषि वृद्धि, शिक्षा, चिकित्सा सेवा, ऊर्जा, दूरसंचार, ग्रामीण विकास/पर्यटन टेक्सटाइल क्षेत्र में भी वृद्धि को प्रोत्साहित करेगा। यह प्रक्षेत्र अभी भी उपर उठने की स्थिति में है और वांछित दिशा में बढ़ने की स्थिति में है। यह अनेक उद्यमों तथा स्टार्ट अप के लिए असीम संभावना रखता है। राज्य में शिक्षित युवा, सस्ते कामगार की उपलब्धता इस क्षेत्र में निवेश के लिए स्पष्ट रुप से लाभप्रद है। राज्य सरकार द्वारा भी बिहटा (पटना) तथा राजगीर में सूचना प्रौद्योगिकी पार्क की स्थापना हेतु अधिसूचित किया गया है।

टेक्सटाइल प्रक्षेत्रः-

टेक्सटाइल प्रक्षेत्र जी0डी0पी0 में महत्वपूर्ण योगदान, विनिर्माण आउटपुट, रोजगार सृजन तथा निर्यात आय के सहारे भारतीय अर्थव्यवस्था में मुख्य भूमिका अदा करता है। इस प्रक्षेत्र का योगदान औद्योगिक उत्पादन में 14 प्रतिशत भारतीय जी0डी0पी0 में 4 प्रतिशत तथा देश के निर्यात आय में 13 प्रतिशत है। टेक्सटाइल प्रक्षेत्र भारत वर्ष में रोजगार सृजन का सबसे बड़े श्रोतों में से एक है। यह सीधे तौर पर 4.5 करोड़ लोगों को रोजगार देता है।

बिहार में घरेलू वस्त्र उद्योग और दूसरे मूल्य संवर्द्धन क्रियाकलाप के लिए प्रचूर संभावनायें हैं। बिहार में वस्त्र उद्योग में सिल्क एक महत्वपूर्ण उत्पाद है। सिल्क उत्पादन में बिहार प्रसिद्ध रहा है। बिहार का भागलपुर जिला सिल्क धागों के विनिर्माण का केन्द्र रहा है। भागलपुर का तसर सिल्क बिहार का एक विशिष्ट उत्पाद है, जिसमें लाभकारी मूल्य प्रदायता की सम्भावना है। वर्ष 2014-15 में बिहार में लगभग 60 टन सिल्क का उत्पादन हुआ है। राज्य में जूट दूसरा फाइबर उत्पाद है। वर्ष 2014-15 में बिहार में लगभग 1420 हजार टन जूट का उत्पादन हुआ है। निबन्धित एस0पी0एमी0 सर्वश्री पुनरासर जूट पार्क लि0 के माध्यम से रु0 42.36 करोड़ की निवेश से मरंगा पूर्णिया में एक जूट पार्क की स्थापना की जा रही है। पी0पी0पी0 मोड में राज्य सरकार द्वारा 44.30 एकड़ भूमि अंशदान के रुप में तथा रु0 2.00 (दो) करोड़ अनुदान स्वरुप दिया गया है। इस जूट पार्क में वर्तमान में दो इकाई सर्वश्री तिरुपति कोमोडिटीज प्रा0लि0 तथा सर्वश्री पुनरासर जूट पार्क प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित है और कार्यरत है। वे जूट यार्न जूट ट्वाइन, जूट के कपड़े और अन्य जूट उत्पाद का उत्पादन कर रहे हैं। बिहार में 14000 पावरलूम है, जो मुख्य रुप से भागलपुर, गया और बांका जिले में अवस्थित है। उनके मुख्य उत्पाद सूती चादर बेड सीट, फर्नीशिंग क्लौथ ईत्यादि हैं। वस्त्र मंत्रालय द्वारा संचालित एक प्रशिक्षण केन्द्र नाथनगर, भागलपुर में है, जहॉ प्रत्येक वर्ष 120 पावर लूम बुनकरों को प्रशिक्षण दिया जाता है। वस्त्र उद्योग एक उच्च श्रम घनिष्ट उद्योग है। बिहार में करीब एक लाख बुनकर हैं जिनकी जीविका का साधन धागों एवं वस्त्र निर्माण से जुड़ा हुआ है। बुनकर समुदाय को पाया जाना वस्त्र उद्योग के लिए कुशल और अर्द्धकुशल कारीगर की उपलब्धता के रुप में एक महत्वपूर्ण सम्पदा है। सतत जुड़े बुनकर समुदाय के अतिरिक्त बड़ी संख्या में युवा भी (विशेषकर युवतियों) इस प्रकार की उत्पादक रोजगार के अवसर के प्रतीक्षा में उपलब्ध हैं। जैसा कि वस्त्र निर्माण उद्योग उन्हें सिलाई, कटाई और अन्य दूसरे तरह के टेलरिंग कार्य के अवसर प्रदान करते हैं।

अक्षय ऊर्जा प्रक्षेत्रः-

बिहार जिसकी विद्युत प्रक्षेत्र में शिखर घाटा 669 मेगावाट है, जो अब तक मुख्य रुप से केन्द्रीय जेनरेशन स्टेशनों पर निर्भर है। वर्तमान में राज्य मुख्यतः विद्युत जेनरेशन के लिए परम्परागत ऊर्जा श्रोत पर निर्भर है। विद्युत की कमी जो भविष्य के विकास/औद्योगिक विकास के लिए सबसे बड़ी बाधा उत्पन्न करती है। राज्य में प्रति व्यक्ति विद्युत खपत 203 किलोवाट आवर है जो राष्ट्रीय औसत से अभी भी कम है और भविष्य में मॉग और भी बढ़ेगी। राज्य के सर्वांगीण आर्थिक विकास को देखते हुए विद्युत के महत्व को महसुस करती है और इस खाई को कम करने के लिए बड़े पावर प्रोजेक्ट को स्थापित करने हेतु कदम उठाये गये हैं जो मुख्य रुप से परम्परागत श्रोत पर निर्भर है। अभी वे स्थापना के विभिन्न चरणों में है। ये बड़े पावर प्रोजेक्ट को चालू होने में लम्बा सगर्भता समय है, जबकि मॉग लगातार बढ़ेगा जिससे राज्य में आवश्यकता पूर्ति हेतु अनोखा अवसर नवीनीकरण उर्जा के प्रमापीय प्रणाली स्थापित करने के लिए प्रदान करेगा। बिहार में ग्रामीण उर्जा की संभावना 12.559 गीगावाट (सोलर 11.2 गीगावाट, वायोमास गैसीफायर 619 मेगावाट, बगासे कोजेनेरेशन 300 मेगावाट, विन्डपावर 144 मेगावाट, अनुपयोगी वस्तु से उर्जा 73 मेगावाट ईत्यादि) की संभावना है जो अभी भी बढ़ने की संभावना है। इसके अतिरिक्त सोलर ऑफ ग्रीड उपयोग के लिए बहुत बड़ी संभावना है जैसे- एस0पी0एमी0 पम्प, सोलर वाटर हीटर, सोलर स्ट्रीट लाइट ईत्यादि। यह अक्षय उर्जा मोटूलर प्रोडक्ट उत्पादन के लिए आरई प्रोजेक्ट के लिए असीम संभावना दर्शाती है।

REFERENCES

1. “Sub-national HDI – Area Database” – Global Data Lab Institute for Management Research, 23 September 2018
2. Census 2011 (Final Data) – Demographic details Literate Population (Total, Rural & Urban)
3. "बिहार के फेमस फूड्स, जीवन में एक बार जरुर करें ट्राई" प्रभात खबर 13 दिसम्बर 2013
4. "बिहार में घुमने के लिए कौन सी जगह है" प्रभात खबर 16 जनवरी 2023
5. “Bihar Budget Analysis” PRS Legislative Research